E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

शाकुन्तलम् का नाटकत्व

अथवा

नाटक के रूप में अभिज्ञानशाकुन्तलम् की समीक्षा

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

रूपक के दस भेदों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् 'नाटक' नामक भेद के अन्तर्गत आता है क्योंकि इसमें नाटक के अधिकांश लक्षण घटित हो जाते हैं। नाटक के रूप में अभिज्ञानशाकुन्तलम् की समीक्षा से पूर्व नाटक के लक्षण को जान लेना अपेक्षित होगा। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार नाटक का लक्षण इस प्रकार है-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासद्ऋर्यादिदुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः।।
सुखदुःखसमुद्भूतिः नानारससमन्वितम्।
पञ्चादिका देशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः।।
प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः।।
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणेद्भुतः।।

अर्थात् नाटक का चरित्र इतिहास और पुराण आदि में प्रसिद्ध होना चाहिए। वह मुख आदि पाँच सन्धियों से और अनेक विभूतियों से युक्त, सुख और दुःख की उत्पत्तिवाला, जैसे कि राम और यधिष्ठिर आदि के वृत्तान्तों से स्पष्ट से स्पष्ट है। शृङ्गार आदि अनेक रसों से अव्यवहित होता है। उसमें पाँच से लेकर दश अङ्क तक कहे गए हैं। नायक प्रख्यात वंश का राजर्षि जैसे दुष्यन्त आदि धीरोदात्त और प्रतापी, दिव्य जैसे श्रीकृष्ण आदि और दिव्यादिव्य अर्थात् जो दिव्य होकर भी अपने में नरत्व का

अभिमान करने वाले जैसे राम आदि और गुणवान् होना चाहिए। अङ्गी (प्रधान रस) एक ही होना चाहिए शृङ्गार या वीर। अन्य सब रस अङ्ग (अप्रधान) होते हैं। निर्वहण सन्धि में अद्भुत रस होना चाहिए।

अब इस कसौटी पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् को कसा जाना है। इसका विश्लेषण आगे किया जा रहा है।

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्-

अर्थात् नाटक का कथानक इतिहास और पुराण आदि में प्रसिद्ध होना चाहिए। अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व (अध्याय 67-74) में प्राप्त होती है जो अशेष विश्व में ख्यात है। पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा प्राप्त होती है। कविता कामिनी के विलास कविकुलगुरु महाकवि कालिदास ने महाभारत की इस कथा को नवनवोन्मेषशाललिनी प्रतिभा और अनुपम कल्पनाशक्ति से एक रसपूर्ण एवं मनोरम नाटक का स्वरूप दे दिया। अतः 'नाटकं ख्यातवृत्त स्यात्' की कसौटी पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् खरा उतरता है।

पञ्चसन्धिसमन्वितम्-

नाटक में पञ्चसन्धियों का होना आवश्यक है-

यथासङ्ख्येन जायन्ते मुखाद्या पञ्चसन्धयः।
मुखं प्रतिमुखं गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।।

अर्थात् पञ्चसन्धियाँ हैं-मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श तथा निर्वहण।

यहाँ ध्यातव्य है कि पञ्च अर्थप्रकृतियों और पञ्च कार्यावस्थाओं का क्रमशः संयोजन होकर उनके आधार पर नाटक के शरीर का सन्धियों के रूप में विभाजन किया जाता है। इसे अग्राङ्कित तालिका से और स्पष्ट किया जा सकता है-

कार्यावस्था	अर्थप्रकृति	सन्धि
आरम्भ	बीज	मुख
यत्न	बिन्दु	प्रतिमुख
प्रत्याशा	पताका	गर्भ

नियताप्ति	प्रकरी	अवमर्श
फलागम	कार्य	उपसंहृति/निर्वहण

पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पञ्चसन्धियों को इस प्रकार स्पष्ट किया है-

क) मुखसन्धि-प्रस्तावना के बाद से लेकर सम्पूर्ण प्रथम अङ्क,

ख) प्रतिमुखसन्धि-सम्पूर्ण द्वितीय एवं तृतीय अङ्क,

ग) गर्भसन्धि-सम्पूर्ण चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क,

घ) विमर्श (अवमर्श)-सम्पूर्ण षष्ठ अङ्क एवं

ङ) निर्वहण- सम्पूर्ण सप्तम अङ्क।

पञ्चादिका देशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः-

किसी भी नाटक में कम से कम पाँच तथा अधिक से अधिक दश अङ्क होना चाहिए। अभिज्ञानशाकुन्तम् में कुल सात अङ्क हैं।

प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदात्तः प्रतापवान्। दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः-

इस सिद्धान्त के अनुसार नाटक का नायक प्रख्यात वंश का धीरोदात्त प्रतापी राजा होता है अथवा दिव्य या दिव्यादिव्य गुणवान् पुरुष नायक होता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक दुष्यन्त प्रख्यात पुरुवंश के हैं जो अभिज्ञानशाकुन्तलम् के निम्नाङ्कित श्लोक से स्पष्ट है-

जन्म यस्य पुरोवंशे यत्तरूपमिदं तव।

पुत्रमेवंगुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।।

अर्थात् जिसका पुरु के वंश में जन्म हुआ है, उस आपके लिए यह (तपस्वी के कहने पर बाण को धनुष से उतारना) अत्यन्त उचित है। इसी प्रकार के गुणों से युक्त चक्रवर्ती पुत्र को प्राप्त करें।

दुष्यन्त धीरोदात्त नायक के गुणों से सम्पन्न हैं। धीरोदात्त नायक के गुणों को स्पष्ट करते हुए दशरूपक में कहा गया है-

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।

स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः।।

अर्थात् धीरोदात्त नायक महाबलशाली (शोक-क्रोधादि से अभिभूत न होने वाला), अति गम्भीर, क्षमाशील, आत्मश्लाघा न करने वाला, स्थिर-प्रकृति, विनय से अहङ्कार को दबाने वाला तथा दृढव्रत होता है। आलोच्य नाटक के नायक दुष्यन्त इन सभी गुणों से युक्त हैं।

नायक दुष्यन्त प्रतापी भी हैं। वे पराक्रमी एवं योद्धा है। दुष्यन्त की वीरता एवं अमित शौर्य से राक्षस जगत् भी इतना भयभीत है कि उसे (दुष्यन्त को) राक्षसों के वध के लिए बाण-सन्धान की भी आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि प्रत्यञ्चा के टङ्कार मात्र से राक्षस सम्बन्धी विघ्न-बाधा दूर हो जाती है-

का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैवं दूरतः।

हुङ्कारेणेव धनुषः स हि विघ्ननानपोहति।।

उसे अपनी शक्ति एवं अदम्य शौर्य पर इतना विश्वास है कि वह विदूषक के साथ सैनिकों को राजधानी भेज देता है और अकेले ही आश्रम की रक्षा का भार वहन करता है। मानव-लोक ही नहीं देवलोक को भी दुष्यन्त की वीरता पर पूर्ण विश्वास है। दैत्यों के साथ युद्ध (वैर) होने पर देवता या तो इन्द्र के वज्र पर भरोसा करते हैं या दुष्यन्त के अधिज्य धनुष पर-

आशंसन्ते समितिषु सुरा बद्धवैरा हि दैत्यैरस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे।

एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।अङ्गमन्ये रसाः सर्वे.....-

नाटक का मुख्य रस शृङ्गार अथवा वीर होता है और अन्य रस उसके सहायक होते हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शृङ्गार रस मुख्य है तथा वीर, भयानक, हास्य आदि (रस) उसके अङ्ग रूप से निबद्ध हैं। अङ्गी शृङ्गार रस का कतिपय उदाहरण है-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैरनाविद्धं रत्नं नवमनास्वादितरसम्।

पुनश्च

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नधम्।।

अङ्ग करुण रस का उदाहरण है-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।

वैकलव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

कार्यो निर्वहणेद्भुतः-

निर्वहण सन्धि में अद्भुत रस की अभिव्यञ्जना होती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में इसका उदाहरण है-

प्राणानामनिलेन वृत्तिरुचिता सत्कल्पवृक्षे वने

तोये काञ्चनपद्मरेणुकपिशे धर्माभिषेकक्रिया।

ध्यानं रत्नशिलातलेषु विबुधस्त्रीसन्निधौ

यत् काङ्क्षन्ति तपोभिरन्यमुनयस्तस्मिंस्तपस्यन्त्यमौ।।

अर्थात् कल्पवृक्षों वाले इस वन में वायु के द्वारा अर्थात् हवा पीकर जीवन-यापन किया जाता है। स्वर्ण-कमलों के पराग के पीले जल में धार्मिक स्नानकार्य सम्पन्न होता है। रत्नों के शिलाखण्डों पर बैठकर ध्यान किया जाता है। देवाङ्गनाओं के समीप में संयम इन्द्रिय निग्रह चलता है। दूसरे मुनि लोग अपनी तपस्याओं के द्वारा जिन वस्तुओं को चाहते हैं, उन्हीं वस्तुओं के बीच में ये मुनि लोग तपस्या करते हैं।

इस श्लोक में कठोर संयम का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। लोग कहा करते हैं कि उपभोग के साधनों के न होने पर तो सभी लोग संयमी बनते हैं। उनके होने पर जो संयमी बन सके, वही संयमी है।

इस प्रकार नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से शाकुन्तल एक सफल नाटक है।